SHIKSHA CLASSES

विषय : हिंदी **कुल अंक : ८०**

कक्षा : १० वी **Prelim Question Paper - 1** **समय : ३ घंटे**

विभाग - १ गद्य (२० अंक)

प्र.१ पठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(८)**

कृति १) कारण लिखिए । २

१) नागरी जी को इस पुस्तक को फिरसे पढ़ने की इच्छा है -

२) नागरी जी के पास इन चीज़ों का सँजोकर संग्रहीत किया है -

२) आकृति पूर्ण कीजिए । २

१) नागर जी के प्रिय विदेशी लेखक है

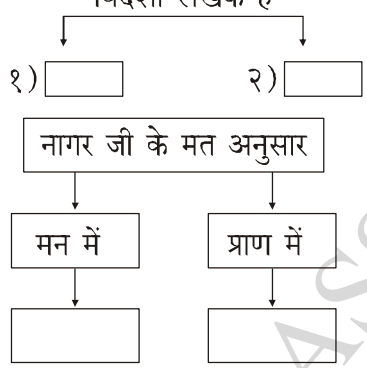

२)

तिवारी जी : अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं ?

नागरी जी : अगर दिल से पूछो तो एक ही आदमी । उसे बहुत प्यार करता हूँ । वह है रामविलास शर्मा । प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का संग्रह 'देशी और विलायती' अगर मिल जाए तो फिर पढ़ना चाहूँगा । बदलते हुए भारतीय समाज के सुंदर चित्र हैं उसकी कहानियों में । टॉल्स्टॉय और चेखव की रचनाएँ भी मुझे प्रिय हैं ।

तिवारी जी : आपने तो पत्रों का भी बहुत संकलन किया है ?

नागर जी : हाँ, बहुत । पत्रों का संग्रह भी काफी है, लेकिन वह व्यवस्थित नहीं है । मैंने प्रत्येक जाति के रीति-रिवाज भी इकट्ठे किए हैं । इसके लिए घूमना बहुत पड़ा है । बड़े-बूढ़ों से सुनकर भी बहुत कुछ प्राप्त किया है । 'गदर के फूल' के लिए मुझे बहुत लोगों से मिलना-जुलना पड़ा ।

तिवारी जी : आपने अपने उपन्यासों के लिए फील्डवर्क बहुत किया है ।

नागर जी : हाँ, बहुत करना पड़ा है । 'नाच्यो बहुत गोपाल' के लिए सफाई कर्मियों की बस्तियों में जाना पड़ा । उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा।

तिवारी जी : नागर जी, क्या आप मन और प्राण को अलग-अलग मानते हैं?

नागर जी : हाँ, प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा । मन की गति आगे तक है । प्राण को

SHIKSHA CLASSES, BHANDARA

वहाँ तक खींचना पड़ता है । मन एक ऐसा निर्मल जल है जिससे जीवन के संस्कार रँगते हैं । मन, प्राण से ही सधता है ।

३) उचित उपसर्ग लगाकर सार्थक शब्द बनाइए । २

१) गुण २) भाग्य ३) मान ४) मल

४) 'किसी विषय की जानकारी लिखने के पहले उसके संदर्भ की जानकारी हासिल करना जरूरी है' इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । २

आ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(८)**

१) आकृति पूर्ण कीजिए ।

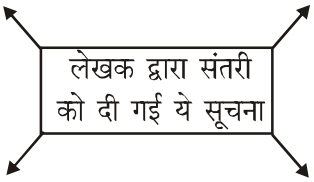

२

२) ऐसे दो प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हो । २

१) अभाव २) इंपाला शेवरलेट

हमने अपने जीवन में बाबू जी के रहते अभाव नहीं देखा। उनके न रहने के बाद जो कुछ मुझपर बीता, वह एक दूसरी तरह का अभाव था कि मुझे बैंक की नौकरी करनी पडी। लेकिन उससे पूर्व बाबू जी के रहते मैं जब जन्मा था तब वे उत्तर प्रदेश में पुलिस मंत्री थे। उस समय गृहमंत्री को पुलिस मंत्री कहा जाता था। इसलिए मैं हमेशा कल्पना किया करता था कि हमारे पास ये छोटी गाड़ी नहीं, बड़ी आलिशान गाड़ी होनी चाहिए। बाबू जी प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ जो गाड़ी थी वह थी, इंपाला शेवरलेट। उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिले और उसे चलाऊँ। प्रधानमंत्री का लड़का था। कोई मामूली बात नहीं थी। सोचते-विचारते, कल्पना की उड़ान भरते एक दिन मौका मिल गया। धीरे-धीरे हिम्मत भी खुल गई थी ऑर्डर देने की। हमने बाबू जी के निजी सचिव से कहा - सहाय साहब, जरा ड्रायवर से कहिए, इंपाला लेकर रेजिडेंस की तरफ आ जाएँ।

दो मिनट में गाड़ी आकर दरवाजे पर लग गई। अनिल भैया ने कहा -'' मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं। तुम्हीं चलाओ।

मैं आगे बढ़ा। ड्राइवर से चाभी माँगी। बोला- तुम बैठो, आराम करो, हम लोग वापस आते हैं अभी।

गाड़ी ले हम चल पड़े। क्या शान की सवारी थी। याद कर बदन में झुरझुरी आने लगी है। जिसके यहाँ खाना था, वहाँ पहुँचा। बातचीत में समय का ध्यान नहीं रह। देर हो गई।

याद आया बाबू जी आ गए होंगे।

वापस घर आ फाटक से पहले ही गाड़ी रोक दी। उतरकर गेट तक आया। संतरी को हिदायत दी। यह सैलूट-वैलूट नहीं, बस धीरे से गेट खोल दो। वह आवाज करे तो उसे बंद मत करो, खुला छोड़ दो।

३) परिच्छेद में आए अंग्रेजी शब्द ढूँढकर लिखो: २

१) २) ३) ४)

४) बचपन में मन में आनेवाली नई कल्पनाओं के बारे मे अपने विचार ६-८ वाक्य में लिखिए । २

इ) निम्नलिखित अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(४)**

SHIKSHAN CLASSES, BHANDARA

१) संजाल पूर्ण कीजिए । २

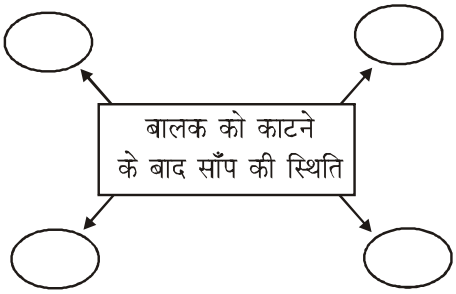

उसकी पूँछ जो दबी, तो साँप को गुस्सा आ गया । उसने बालक को काट लिया । बालक हँसता-हँसता वहीं धरती पर लोट गया ।

साँप ने जाकर उसे सूँघा । बालक की जान निकल गई थी । साँप ने देखा कि बालक बहुत ही सुंदर था । उसका मुख अब भी जैसे हँस रहा हो । उस समय साँप को बहुत दुख हुआ। उस दुख में दो रोज तक उसको कुछ भी नही सूझा । वह बालक को चारों और कुंडलाकर घेरकर बैठा रहा, न हिला न डुला, मानो वह यम के खिलाफ बालक की देह का पहरा देता हो । जब शनै-शनैः बालक के मुँह से स्मित हास की आभा मिटने लगी और शरीर गलने लगा तब हठात् साँप भी वहाँ से हटा।

उस समय उसने प्रार्थना की कि हे भगवान ! मेरा जहर मुझमें से तू निकाल ले । मैं किसी का अनिष्ट करना नहीं चाहता हूँ । मुझे गुस्सा जरा भी आ जाता है, तब में अपने को भूल जाता हूँ । मैं क्या करूँ, किस की जान लेने की मेरी इच्छा कभी नही होती, लेकिन मेरा दाँत लगते ही उसकी जान चली जाती है । हे भगवान ! तू मेरे जहर के दाँत निकाल ले ।

२) साँपो के बारे में अपनी जानकारी ६-८ वाक्य में लिखिए । २

विभाग २ पद्य (१२ अंक)

प्र.२ अ) निम्नलिखित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए । (६)

१) तालिका पूर्ण कीजिए । २

इन्हे	**यह कहा है ।**
१)	बहु समुदाय
२) नव पल्लव वाले	.....
३) लुप्त हुई	.....
४)	ज्ञान उत्पन्न हुआ

२) पद्यांश में आए हुए पौधों का नाम १

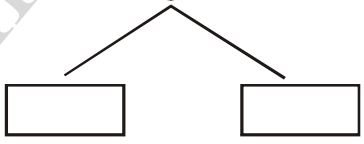

२) पद्यांश में आया १

SHIKSHA CLASSES, BHANDARA

१) धर्मग्रंथ → [ ]

२) पक्षी → [ ]

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ॥
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिले बिबेका ॥
अर्क-जवास पात बिनु भयउ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी ॥
ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना ॥
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं । कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
विविध जंतु संकुल महि भ्रजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाई सुराजा ॥
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना । जमि इंदिय गन उपजे ग्याना ॥

३) उपर्युक्त पद्यांश की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए । २

प्र.२ : आ) निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

कृति १) आकृती पूर्ण कीजिए । २

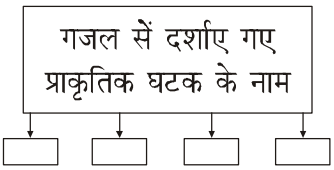

एक जुगनू ने कहा मैं भी तुम्हारे साथ हूँ,
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो ।
एक मर्यादा बनी है हम सभी के वास्ते,
गर तुम्हें बनना है मोती सीप के अंदर दिखो ।
डर जाए फूल बनने से कोई नाजुक कली,
तुम ना खिलते फूल पर तितली के टूटे पर दिखो ।
कोई ऐसी शक्ल तो मुझको दिखे इस भीड़ में,
मैं जिसे देखूँ उसी में तुम मुझे अक्सर दिखो ।

कृति २) जिनके उत्तर दिए गए शब्द हो, ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए । २

१) भीड़ २) मोती

कृति ३) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवन मूल्य लिखो । २

एक जुगनू ने कहा मैं तभी तुम्हारे साथ हूँ,
वक्त की इस धुंध में तुम रोशनी बनकर दिखो ।

विभाग - ३ पूरक-पठन (८ अंक)

प्र.३ अ) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए । (४)

SHREEJA CLASSES, BHANDARA

१) बुढ़ी काकी का जो ललचाने वाले व्यजंन थे ये २

इस अवस्था में उसने बूढ़ी काकी को कड़ाह के पास बैठा देखा तो जल गई । क्रोध न रुक सका । वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली- ''ऐसे पेट में आग लगे, पेट है या भाड़? कोठरी में बैठते हुए क्या दम घुटता था? अभी मेहमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका? आकर छाती पर सवार हो गई । इतना ठँसती है न जाने कहाँ भस्म हो जाता है । भला चाहती हो तो जाकर कोठरी में बैठो, जब घर के लोग खाने लगेंगे तब तुम्हें भी मिलेगा । तुम कोई देवी नहीं हो कि चाहे किसी के मुँह में पानी न जाए, परंतु तुम्हारी पूजा पहले ही हो जाए।''

बूढ़ी काकी अपनी कोठरी में जाकर पश्चात्ताप कर रही थीं कि मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गई । उन्हें रूपा पर क्रोध नहीं था । अपनी जल्दबाजी पर दुख था । सच ही तो है जब तम मेहमान लोग भोजन कर न चुकेंगे, घरवाले कैसे खाएँगे ! मुझसे इतनी देर भी न रहा गया । सबके सामने पानी उतर गया । अब, जब तक कोई बुलाने न आएगा, नहीं जाऊँगी ।

मल-ही-मन इसी प्रकार का विचार कर वह बुलाने की प्रतीक्षा करने लगीं । उन्हें एक-एक पल, एक-एक युग के समान मालूम होता था । धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगीं । उन्हें मालूम हुआ कि मुझे गाते दे हो गई । क्या इतनी देर तक लोग भोजन कर ही रहे होंगे । किसी की आवाज नहीं सुनाई देती । अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए। मुझे कोई बुलाने नहीं आया । रूपा चिढ़ गई है, क्या जाने न बुलाए । सोचती हो कि आप ही आएँगी, वह कोई मेहमान तो नहीं जो उन्हें बुलाऊँ । बूढ़ी काकी चलने के लिए तैयार हुई । यह विश्वास कि एक मिनट में पूड़ियाँ और मसालेदार तरकारियाँ सामने आएँगी, उनकी स्वादेर्द्रियों को गुदगुदाने लगा । उन्होंने मन में तरह-तरह के मनसूबे बाँधे, पहले तरकारी से पूड़ियाँ खाऊँगी, फिर दही और शक्कर से, कचौड़ियाँ रायते के साथा मजेदार मालूम होंगी ।

२) 'हमारे घर के वृद्ध व्यक्ति सम्मान के पात्र हैं' इस विषय पर अपने विचार लिखिए । २

प्र. ३रा आ) निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए । (४)

१) अ) परिणाम लिखिए । १

१) सितारों का छीपना । २) मृत्यु को जीना

आ) उत्तर लिखिए । १

१) प्यासी रही - खारे जल से धुल गए विषाद मन पावन ।

२) छाई बन बादल -

मृत्यु को जीना
जीवन विष पीना
है जिजीविषा ।
मन की पीड़ा
छाई बन बादल
बरसीं आँखे ।
चलतीं साथ
पटरियाँ रेल की,
फिर भी मौन ।

सितारे छिपे
बादल की ओंट
सूना आकाश
तुमने दिए
जिन गीतों को स्वर
हुए अमर ।
सागर में भी
रहकर मछली
प्यासी हो रही है ।

SHIKSHA CLASSES BHANDARA

२) **निम्नलिखित काव्य पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।** २

मृत्यु को जीना, जीवन विष पीना है जिजीविषा।

विभाग ४ भाषा अध्ययन (१४ अंक)

प्र.४ था सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) **अधोरेखांकित शब्द का भेद लिखिए ।** १

अजय बड़ा चतुर है ।

२) **निम्नलिखित वाक्य में प्रयुक्त अव्यय ढूँढकर उसका भेद लिखिए ।** १

१) बड़े बाबू मुझे धीरे-धीरे हिलाने लगे ।

२) **अव्यय को अपने वाक्य मे प्रयोग कीजिए ।** १

तथा

३) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए ।** २

१) ठीक ग्यारह बजे प्रधानमंत्री बाहर आते है । (सामान्य भूतकाल)

२) मुझे भाई का जला हुआ चेहरा याद आता है । (सामान्य भविष्यकाल)

४) **तालिका पूर्ण कीजिए :** १

संधि	संधि + विच्छेद	भेद
----------	उत् + ज्वल	----------
नयन	----------	----------

५) १) **निम्नलिखित वाक्य का रचना के अनुसार भेद लिखिए ।** १

लोग शरीर श्रम करना नहीं चाहते और इसे हीन दृष्टी से देखते है ।

२) **सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए ।** १

गरीब भूख की लाचारी से श्रम करता है। (संदेहवाचक वाक्य)

६) **वाक्य शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए ।** २

१) पहले प्रक्रिति हमारे माता के समान थी।

२) इनकी बदन पर पाला गिरती है।

७) **सहायक क्रियाएँ पहचानकर लिखिए ।** १

१) अब वह अपने नए मकान में रहने लगा।

२) वे शाल-दुशाले ओढ़े रहते है।

८) **प्रथम तथा द्‌वितीय प्रेरणार्थक क्रियाएँ लिखिए ।** १

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्‌वितीय प्रेरणार्थक रूप
खेलना		

९) १) **वाक्य में यथास्थान विरामचिन्हों को प्रयोग कीजिए ।** १

मैने कराहते हुए पूछा मैं कहा हूँ।

२) **वाक्य में प्रयुक्त कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** १

नदी अपने किनारों को तोड़ती हुई आगे बढ़ती जाती है।

SHIKSHA CLASSES, BHANDARA

विभाग - ५ उपयोजित लेखन (२६ अंक)

प्र.५.अ. पत्र लेखन ।

१) निम्नलिखित जानकारी पर आधारित पत्र-लेखन कीजिए । **(५)**

योगेंद्र कुमार, १०/१२, इमामपुर से अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न समस्या की और ध्यान आकर्षित करने हेतू दैनिक भारत के संपादक को पत्र लिखिए :

अथवा

B-90 अनंत विहार कान्हेरे चौक, मल्हार नगर शिर्डी से नाचिकेत/नचिकेता भाषण स्पर्धा में प्रथम आने पर अपने मित्र हर्षल को / हर्षाली को पत्र लिखता/लिखती है।

२) गद्य - आकलन प्रश्ननिर्मिति ।

निम्नलिखित गद्यांश पर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हो। **(४)**

प्रयत्न हमेशा सकारात्मक होने चाहिए। मानवी इतिहास के विकास में नकारात्मक प्रयत्न मानवीय जीवन के लिए घातक साबित हुए हैं। हमारे प्रयत्नों की नींव में मानवीय मूल्य होने चाहिए। उनमें सामाजिक हित के संदर्भ होने चाहिए। प्रयत्न व्यक्ति और समाज की जिंदादिली का लक्षण है। प्रयत्नों के कारण जीवन में चैतन्य का निर्माण होता है। जीवन आनंददायी, सफल, सार्थक और कल्याणकारी बनता है। प्रयत्नहीन जीवन न केवल नीरस, उबाऊ और शुष्क होता है, अपितु उन्नति में भी वह बाधक होता है, इसलिए मनुष्य को हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन में सफलता-असफलता की चिंता छोडकर निरंतर बिना रुके, बिना उकताए, अपने उद्देश्यों की तरफ कदम बढ़ाते रहना चाहिए। जो आनंद और संतोष इसमें है, वह अतुलनीय तथा अवर्णनीय है। इसी से हमारे जीवन को अर्थ प्राप्त होता है।

आ) वृत्तांत लेखन । **(५)**

विद्यालय में आयोजित 'शिक्षक दिन' पर वृत्तांत तैयार कीजिए ।

(०५ सितंबर २०२० संस्कार विद्यालय, पूणे - ४११००२)

अथवा

विज्ञापन लेखन ।

बाल-मासिक पत्रिका 'विवेकानंद' के लिए निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर एक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

मुद्दे: आकर्षक लेख, बोधकथाएँ, कार्टून कथा, चित्रलेख ।

इ) कहानी लेखन । **(५)**

एक लालची आदमी ------ कड़ी तपस्या करना ------ देवता का प्रसन्न होना ------ वरदान देना ------ दौडकर जितनी जमीन घेरोगे, उतनी तुम्हारी ------ दौड़ते रहना ------ थककर गिरना ------ मृत्यु ------ सीख ।

ई) निबंध लेखन । **(७)**

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग ८० - १०० शब्दों में निबंध लिखिए ।

१) यदि मैं अंतरिक्ष यात्री होता...

२) मेरा प्रिय हिंदी कवि ।

* * *

SHIKSHA CLASSES PUNE

BECOME AN ACE IN JEE & NEET

SHIKSHA CLASSES

Believe & Achieve

JEE | NEET | Previse (8-10)

8625055707 | 8623085707 shikshaclasses.co.in

M-19, MHADA Colony, Khat Road, Bhandara

Learn with Jaiswal sir